रामचरितमानस

-एक अंतरीय झलक

कृपाल सिंह

कृपाल रूहानी सत्संग सभा (भबात)
1206, सैक्टर 48 बी
चण्डीगढ़

Published by :
Kirpal Ruhani Satsang Sabha (Bhabat)
1206, Sector 48B, Universal Enclave,
Chandigarh - 160 047 (India)
Ph.: 0172-2674206, 0172-4346346
E-mail : gssaini1412@gmail.com

26th October, 2011
(Diwali)

1100 copies

Printed at :
Sanjay Printers,
#404, Industrial Area, Phase -II,
Chandigarh
Phone : 0172-5017390

समर्पित

सर्वशक्तिमान परमात्मा को
जो आज तक आए सभी संत-महापुरूषों के
रूप में
कार्य करता रहा है
तथा
परम संत बाबा सावन सिंह जी महाराज को
जिनके पावन चरणों में बैठकर
लेखक ने परम पवित्र 'नाम'
का
मधुर रस पान किया

विशेष सूक्तियाँ

- श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती।।
- चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ। कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ।।
- कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। रामु न सकहिं नाम गुन गाई।।
- मातु पिता गुर प्रभु कै बानी। बिनहिं बिचार करिअ सुभ जानी।।
- जिन्ह हरिभगति हृदयँ नाहिं आनी। जीवत सव समान तेइ प्रानी।।
- राखइ गुर जौं कोप बिधाता। गुर बिरोध नहिं कोउ जग त्राता।।
- जे नहिं साधु संग अनुरागे। परमारथ पथ बिमुख अभागे।।
- करम प्रधान बिस्व करि राखा। जो जस करइ सो तस फलु चाखा।।
- मैं अरु मोर तोर तैं माया। जेहिं बस कीन्हे जीव निकाया।।
- जहाँ सुमति तहँ संपति नाना। जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना।।
- बड़ें भाग मानुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा।।
- गुर बिनु भव निधि तरइ न कोई। जौं बिरंचि संकर सम होई।।
- कबि कोबिद गावहिं असि नीती। खल सन कलह न भल नाहिं प्रीती।।
- लाभु कि किछु हरि भगति समाना। जेहि गावहिं श्रुति संत पुराना।।
- मोरें मन प्रभु अस बिस्वासा। राम ते अधिक राम कर दासा।।
- नर तन सम नहिं कवनिउ देही। जीव चराचर जाचत तेही।।
- सत संगति दुर्लभ संसारा। निमिष दंड भरि एकउ बारा।।
- संत बिटप सरिता गिरि धरनी। पर हित हेतु सबन्ह कै करनी।।
- अनुज बधू भगिनी सुत नारी। सुनु सठ कन्या सम ए चारी।।
- भगति हीन गुन सब सुख ऐसे। लवन बिना बहु बिंजन जैसे।।